'जगद्गुरू षंकराचार्य' नामक अपने दूसरे उपन्यास में उन्होंनें भारत को विष्व के पटल पर वहीं स्थान दिलाने का प्रयास किया जो उसे वैदिक युग में प्राप्त था। उन्होंने लिखा–